① Lecture No (03)

Name of the College – A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai.

Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt – A.I.H.&C.

Lession/Plan – B.A Part II (H) AIH&C Paper IV
Date – 29-06-2021
Name of Topic – कुशीनगर

कुशीनगर — बौद्ध धर्म के चार तीर्थस्थानों में सारनाथ के पश्चात् कुशीनगर की गिनती होती है। यहीं भगवान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। यह स्थान देवरिया जिला (उत्तरप्रदेश) में स्थित है, जो कसिया से एक मील की दूरी पर है। प्राचीन नाम कुशीनगर है, जिसका उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है। बौद्ध मंदिर के पार्श्व में स्तूप है, जिसे 'महापरिनिर्वाण' स्तूप कहते हैं। आनंद ने भगवान के आग्रह पर निर्माण के लिए इसे चुना था। इस स्तूप के निर्माता का नाम अज्ञात है। इसका संस्कार विभिन्न समय में होता रहा। पाँचवी सदी में भी इसकी मरम्मत हुई थी। उसकी खुदाई से एक लेख प्रकाश में आया है, जिसमें यह उल्लिखित है कि हरिवल स्वामी ने इसे दान दिया था। यह ताम्रपत्र परिनिर्वाण स्तूप के भीतर रखा था। संभवत: हरिवल स्वामी ने इसका संस्कार किया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस स्तूप को देखा था। यह 167 फीट ऊँचा है।

दूसरा स्तूप 'अंगार चैत्य' के नाम से प्रसिद्ध है, जो परिनिर्वाण स्तूप से तीन मील की दूरी पर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर तथागत (बुद्ध) का शरीर जलाया गया था। इसकी खुदाई से कोई वस्तु प्रकाश में नहीं आई।

P.T.O.

दीर्घनिकाय के महापरिनिर्वाण सूत्र में इस सम्बंध में विवरण मिलता है कि बुद्ध ने आनंद से मल्ल की नगरी कुशीनगर में चलने के लिए आग्रह किया था। यहीं आकर बुद्ध को निर्वाण हुआ। उस सूत्र में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है कि भक्त लोगों ने मृत शरीर को कपड़े में लपेट कर चिता पर जलाया।

उस स्थान पर वर्णन किया गया है कि मगध के राजा अजातशत्रु, वैशाली के लिच्छवी, कपिलवस्तु के शाक्य, अलकप्प के बुलि, रामग्राम के कोलिय, वेठद्वीप के ब्राह्मण, पावा के भक्त लोगों ने भी कुशीनारा के मल्ल राजा से शरीरभस्म का अवशेष माँगा। इस प्रकार कुशीनारा में तथागत के निर्वाण के पश्चात् राख के बँटवारे से शांति हुई। साँची के तोरण पर इसी घटना को प्रदर्शित किया गया है।

श्रावस्ती → उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में वर्तमान सहेत - महेत का पुराना नाम श्रावस्ती था, जहाँ भगवान बुद्ध ने धर्मप्रचार के लिए २५ वर्षावास व्यतीत किया। अनाथपिंडक प्रसिद्ध श्रेष्ठी था। जिसने बुद्ध को निमंत्रण देकर वहाँ बुलाया। यह घटना बोधगया तथा भरहुत की वेदिकाओं पर खुदी है। वहाँ भी स्तूपों के भग्नावशेष मिले है। कहा जाता है कि अशोक ने स्तूप बनवाया तथा धातुशरीर भी उसमें रखा था। अनाथपिंडिक आराम के पार्श्व में भग्नावशेष स्थित है।

कौशांबी → इस नगर का नाम रामायण तथा महाभारत में भी उल्लिखित है।
प्राचीन [illegible]

का भी प्रधान केन्द्र हो गया था। प्रयाग से 38 मील पर स्थित यह नगर (कोसम) यमुना के किनारे स्थित है। भगवान बुद्ध ने प्रचारार्थ कौशाम्बी में कई वर्षावास व्यतीत किया। जिसका प्रमाण 'घोषितारामे' के भग्नावशेष से मिलता है जिसका कहा जाता है कि बुद्ध ने कोसंबीय सूत्र का उपदेश यहीं किया था। इस स्थान के महत्व के कारण ही अशोक ने वहाँ स्तंभ स्थापित कर लेख खुदवाया था। पाटलिपुत्र से उज्जैन जाते समय राजमार्ग कौशाम्बी होकर जाता था। इस स्थान की प्रमुखता के कारण अशोक ने स्तूप का भी निर्माण किया। आज भी संघाराम के दक्षिण-पूर्व स्तूप के अवशेष देखे जा सकते हैं। यह 200 फीट ऊँचा था, जो बुद्ध के नख एवं केश के ऊपर निर्मित हुआ था। इसे 'पारिलेयक स्तूप' कहेंगे। फाहियान तथा ह्वेनसांग ने इसका वर्णन किया है।

राजगृह → मगध की प्राचीनतम राजधानी का नाम राजगृह था। जिसे पाटलिपुत्र की स्थापना के पश्चात त्याग दिया गया। भगवान बुद्ध ने ज्ञानप्राप्ति से पहले ही वहाँ वर्षावास व्यतीत करते रहे। मगधनरेश बिंबिसार ने गृध्रकूट पर बुद्ध का निवास करने का निवास स्थान बनवाये। यद्यपि राजगृह में एक भी स्तूप दृष्टिगत नहीं होता, किन्तु चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कई स्तूपों का वर्णन किया है। उसका कथन है कि राजमहल की उत्तरी द्वार के समीप एक स्तूप था। जहाँ देवदत्त तथा अजातशत्रु की मित्रता हुई थी। वहीं उन्होंने बुद्ध को मारने के लिए नीलगिरि हाथी को छोड़ा था पर उनकी आशा फलवती नहीं हुई। यात्री लिखता है कि इसके उत्तर-पूर्व में एक छोटा स्तूप था, जहाँ सारिपुत्र ने अश्वजित भिक्षु की वाणी सुनी और भिक्षु बन गया। उत्तर दिशा में एक अन्य स्तूप था

Scanned with CamScanner

जहाँ भृगुप्त बुद्ध को आग से जला देना चाहता था, अंत में उसे ज्ञान हुआ और भगवान का समादर करने लगा। भृगुप्त के स्थान से कुछ दूरी पर जीवक का स्तूप था। उसे वैद्यराज जीवक ने बुद्ध के लिए निर्मित किया था। यद्यपि आराम में निवास का विवरण मिलता है पर ह्वेनसांग ने उसे स्तूप का नाम दिया है। इन स्तूपों का निर्माण अवशेष के लिए नहीं माना जा सकता। बुद्ध के निर्वाण के पश्चात, स्तूपों में शरीर-अवशेष की कल्पना की जा सकती है। तथागत के गृद्धकूट के मार्ग में भी दो छोटे-छोटे स्तूप बने थे, इसलिए चीनी यात्री ने विहार को स्तूप (आराम) कहा है। उन स्तूपों के भग्नावशेष प्रकाश में नहीं आ सके हैं।

भारती कुमारी
A.I.H.&C.
Date - 29-06-2021.